



अपनी बुलाहट में कदम रखें। अपनी सीमाओं को तोड़ें!
उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन हेतु मार्गदर्शिका

अपनी बुलाहट में कदम रखें। अपनी सीमाओं को तोड़ें।

रविवार का उपदेश, 01 नवंबर, 2026

परमेश्वर उद्देश्य और योजना का परमेश्वर है

भजन संहिता 33:11,15

11 यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएँ पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी।

15 वही उन सभी के हृदयों को गढ़ता है; वह उनके सब कामों पर विचार करता है।

‘युक्ति’ शब्द का अर्थ योजना या उद्देश्य भी हो सकता है।

ध्यान दें कि परमेश्वर के उद्देश्य और योजनाएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं (पद 11)।

वह अपनी योजनाओं को सभी पीढ़ियों पर प्रकट करता है।

यह केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामूहिक स्तर पर भी लागू होता है। परमेश्वर की प्रत्येक समयावधि के लिए एक योजना है। वह इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर है। हमारी पीढ़ी और हमारे समय के लिए भी उसकी एक योजना है।

यह भी ध्यान दें कि परमेश्वर हममें से प्रत्येक के हृदय को व्यक्तिगत रूप से गढ़ता है। हममें से हर एक को परमेश्वर ने एक विशेष उद्देश्य के लिए व्यक्तिगत रूप से रचा है। हम पवित्रशास्त्र में देखते हैं कि परमेश्वर के पास अपने लोगों के लिए एक उद्देश्य और योजना है।

बिल्कुल आरम्भ से ही...

- आदम और हव्वा: “फूलो-फलो और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ और उसे अपने वश में कर लो।”

- इब्राहीम: उस देश में जा जिसे मैंने तुझसे देने की प्रतिज्ञा की है।

- नूह: मेरे लिए एक जहाज बना।

- मूसा: मेरे लोगों को दासत्व से निकालकर प्रतिज्ञा किए हुए देश में ले जा।

और इसी प्रकार आगे भी...

हम उद्देश्य के लिए रचे और बनाए गए हैं

भजन संहिता 139:13



अपनी बुलाहट में कदम रखें। अपनी सीमाओं को तोड़ें!

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन हेतु मार्गदर्शिका

क्योंकि तूने मेरे मन का निर्माण किया; तूने मुझे मेरी माता के गर्भ में रचा।

भजन संहिता 139:16-17

16 तेरी आँखों ने मेरे बेडौल रूप को देखा; और मेरे सब अंग, जो दिन-दिन बनते जाते थे, वे रचे जाने से पहिले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।

17 हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिए कितने अनमोल हैं! उनकी संख्या कितनी बड़ी है!

इफिसियों 2:10 (नए नियम का संदर्भ)

क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया था।

परमेश्वर अपने उद्देश्यों को प्रकट करता है

1 कुरिन्थियों 2:9-10

9 परन्तु जैसा लिखा है, “जो आँख ने नहीं देखा, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के मन में नहीं उठीं, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।”

10 परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है।

हमें उसके उद्देश्य को समझना चाहिए और उसके उद्देश्य के अनुसार योजना बनाना तथा उसका अनुसरण करना आरम्भ करना चाहिए।

भजन संहिता 32:8

मैं तुझे बुद्धि दूँगा और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उसमें तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर दृष्टि रखकर सम्मति दूँगा।

इफिसियों 5:17

इसलिए मूर्ख न बनो, पर समझो कि प्रभु की इच्छा क्या है।

यीशु ने हमें यह प्रार्थना करना सिखाया, “तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो...” (मत्ती 6:9)।

अपने उद्देश्य को जानना एक बात है, लेकिन उस उद्देश्य में चलना दूसरी बात है। इस यात्रा में हमें कुछ सीमाओं का सामना करना पड़ेगा—कुछ सीमाएँ हमारे भीतर होंगी और कुछ हमारे चारों ओर। आज हम दो पवित्रशास्त्रीय अंशों पर विचार करेंगे: यिर्मयाह, जिसने एक आंतरिक सीमा से संघर्ष किया, और आरम्भिक कलीसिया, जिसने एक बाहरी सीमा का सामना किया।



अपनी बुलाहट में कदम रखें। अपनी सीमाओं को तोड़ें!

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन हेतु मार्गदर्शिका

आंतरिक सीमाएँ: यिर्मयाह की कहानी (स्व-छवि)

अक्सर हम स्वयं ही परमेश्वर के उद्देश्यों में कदम बढ़ाने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बन जाते हैं।

जब परमेश्वर ने यिर्मयाह को भविष्यद्वक्ता बनने के लिए बुलाया, तो उसके पास हर प्रकार का बहाना तैयार था। लेकिन आइए देखें कि परमेश्वर उसकी सीमाओं से किस प्रकार निपटता है।

यिर्मयाह 1:5-10

5 “गर्भ में रचने से पहले ही मैंने तुझे जान लिया; और उत्पन्न होने से पहले ही मैंने तुझे पवित्र किया; मैंने तुझे जातियों के लिए भविष्यद्वक्ता ठहराया।”

6 तब मैंने कहा, “हाय! प्रभु यहोवा! देख, मैं तो बोलना नहीं जानता, क्योंकि मैं लड़का हूँ।”

7 परन्तु यहोवा ने मुझसे कहा:

“मत कह कि मैं लड़का हूँ; क्योंकि जिन-जिन के पास मैं तुझे भेजूँ, उन सभी के पास तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ, वही तू कहेगा।

8 तू उनके मुख को देखकर मत डर, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिए मैं तेरे साथ हूँ,” यहोवा की यही वाणी है।

9 तब यहोवा ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ; और यहोवा ने मुझसे कहा, “देख, मैंने अपने वचन तेरे मुँह में डाल दिए हैं।

10 देख, आज के दिन मैंने तुझे जातियों और राज्यों पर ठहराया है कि तू उखाड़े और ढाए, नष्ट करे और गिराए, बनाए और लगाए।”

हर एक सीमा का सामना करने के लिए परमेश्वर की ओर से एक प्रतिज्ञा थी।

#1: परमेश्वर ने यिर्मयाह को बुलाया

यिर्मयाह को “जातियों के लिए भविष्यद्वक्ता” बनने के लिए बुलाया गया था (यिर्मयाह 1:5)।

यिर्मयाह की बुलाहट अनोखी थी। उसे अपने पिता और दादा की तरह याजक नहीं बनना था।

एक भविष्यद्वक्ता परमेश्वर का चुना हुआ और अधिकृत प्रवक्ता होता था, जो लोगों के सामने परमेश्वर के वचन की घोषणा करता था। यह वास्तव में एक बहुत बड़ा कार्यभार था। परमेश्वर आपको कोई कठिन कार्य सौंप सकता है, लेकिन वह जानता है कि उस समय उस कार्य के लिए आप ही सही व्यक्ति हैं, जैसे यिर्मयाह इस कार्य के लिए सही व्यक्ति था।

अनन्तकाल से ही परमेश्वर की यिर्मयाह के लिए यह योजना थी कि वह उसे उसकी माता के गर्भ से ही अलग ठहराए। ठीक इसी प्रकार हममें से प्रत्येक के लिए भी उसकी योजना है, जैसा कि हमने पहले भजन संहिता 139 में देखा।



अपनी बुलाहट में कदम रखें। अपनी सीमाओं को तोड़ें!

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन हेतु मार्गदर्शिका

#2: बाधा: आंतरिक सीमा (स्व-छवि)

यिर्मयाह 1:6

परन्तु मैंने विरोध करते हुए कहा, “हाय! प्रभु यहोवा! देख, मैं बोलना नहीं जानता, क्योंकि मैं तो अभी लड़का ही हूँ।”

“मैं बोलना नहीं जानता”

यिर्मयाह को लगा कि वह सार्वजनिक रूप से बोलने के योग्य नहीं है। यही सीमा मूसा के सामने भी थी (निर्गमन 4:10)।

“मैं तो अभी लड़का ही हूँ”

‘लड़का’ शब्द का अर्थ एक ऐसा युवा, अविवाहित पुरुष है जो किशोरावस्था में हो। उसका उत्तर केवल उसकी आयु को प्रकट नहीं करता, बल्कि यह दिखाता है कि वह स्वयं को कमतर, अनुभवहीन और उस बड़े कार्य से भयभीत महसूस कर रहा था जिसके लिए परमेश्वर उसे बुला रहा था।

उसने अपने भीतर देखा और अपनी सीमाओं को पाया। हम अपने भीतर क्या देखते हैं (हमारी स्व-छवि), यह महत्वपूर्ण है।

#3: परमेश्वर हमें सामर्थ्य प्रदान करेगा

यिर्मयाह 1:7-9

“तब यहोवा ने मुझसे कहा, ‘मत कह कि मैं लड़का हूँ; क्योंकि जिन-जिन के पास मैं तुझे भेजूँगा, उन सभी के पास तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँगा, वही तू कहेगा। तू किसी के मुख को देखकर मत डर, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिए मैं तेरे साथ हूँ। यहोवा की यही वाणी है।’

तब यहोवा ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ और मुझसे कहा, ‘देख, मैंने अपने वचन तेरे मुँह में डाल दिए हैं।’”

परमेश्वर कहता है, “मत कह...”

हम अपने बारे में क्या सोचते हैं (स्व-छवि) और अपने जीवन के विषय में क्या घोषणा करते हैं, यह महत्वपूर्ण है। हमारी घोषणाओं में सामर्थ्य होती है।

“क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ...”

“तब यहोवा ने अपना हाथ बढ़ाकर...”

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह स्वयं यिर्मयाह के साथ रहेगा और उसने उसके मुँह को छुआ। यह स्पर्श उसे शुद्ध करने के लिए इतना नहीं था, जितना कि उसे प्रेरित करने और सामर्थ्य देने के लिए था।

परमेश्वर इसी प्रकार चुनता है और कार्य करता है।



अपनी बुलाहट में कदम रखें। अपनी सीमाओं को तोड़ें!

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन हेतु मार्गदर्शिका

1 कुरिन्थियों 1:27-29

परन्तु परमेश्वर ने संसार के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने संसार के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे। और परमेश्वर ने संसार के नीचों और तुच्छों को, वरन् जो हैं भी नहीं उनको चुन लिया कि उन को जो हैं व्यर्थ ठहराए, ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करने पाए।

नए नियम के विश्वासियों के रूप में, हममें से प्रत्येक को परमेश्वर ने वरदान दिए हैं, अपने अनुग्रह से भरपूर किया है और पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषिक्त किया है।

(इस भाग का संक्षेप में सारांश प्रस्तुत किया जा सकता है।)
हममें से प्रत्येक को परमेश्वर का अनुग्रह मिला है।

- रोमियों 12:6 — और जब कि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो आओ हम उन्हें उपयोग में लाएँ...
- इफिसियों 4:7 — पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है।
- 1 पतरस 4:10 — जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक-दूसरे की सेवा में लगाए।

हमें पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ दी गई है।

- 1 कुरिन्थियों 3:16 — हम पवित्र आत्मा के मन्दिर हैं।
- यूहन्ना 14 और 16 — पवित्र आत्मा हमारा सहायक है। वह हमारी अगुवाई करेगा, हमें सिखाएगा और मार्ग दिखाएगा...
- प्रेरितों के काम 1:8 — “परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे।”
- यूहन्ना 7:37-39 — “उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।”

नए नियम के विश्वासियों के रूप में हमें इस बात को समझना चाहिए—परमेश्वर की बुलाहट ऐसे समय में आ सकती है जब हम स्वयं को तैयार या योग्य न समझें, लेकिन उसका अनुग्रह और आत्मा हमें उसकी बुलाहट और उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम बनाएँगे!

बाहरी सीमाएँ: परिस्थितियाँ, विरोध और बाधाएँ

यीशु के इन दो कथनों पर विचार करें।

यूहन्ना 16:33 (संसार)

“मैंने तुमसे ये बातें इसलिए कही हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैंने संसार को जीत लिया है।”



अपनी बुलाहट में कदम रखें। अपनी सीमाओं को तोड़ें!
उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन हेतु मार्गदर्शिका

एम्प्लीफाइड अनुवाद में इसे “परीक्षाएँ, संकट, पीड़ा और निराशा” कहा गया है।

यूहन्ना 10:10 (शत्रु)

“चोर किसी और काम के लिए नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।”

जब तक हम स्वर्ग के इस पार हैं, तब तक हमें चुनौतियों, बाधाओं, विरोध, पहाड़ों, तूफानों आदि का सामना करना पड़ेगा। यह एक वास्तविकता है, लेकिन हमें इन बाधाओं को तोड़कर अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य में कदम बढ़ाना होगा।

इसे समझाने के लिए हम आरम्भिक कलीसिया के एक पवित्रशास्त्रीय अंश पर विचार करना चाहते हैं।

प्रेरितों के काम 5:17-21

17 तब महायाजक और उसके सब साथी (जो सद्कियों का पन्थ थे) ईर्ष्या से भर उठे।

18 और उन्होंने प्रेरितों को पकड़कर सार्वजनिक बन्दीगृह में डाल दिया।

19 परन्तु रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वार खोल दिए और उन्हें बाहर लाकर कहा,

20 “जाओ, मन्दिर में खड़े होकर लोगों को इस जीवन की सब बातें सुनाओ।”

21 यह सुनकर वे भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपदेश देने लगे। परन्तु महायाजक और उसके साथी आए और महासभा तथा इस्राएलियों के सब पुरनियों को बुलाकर बन्दीगृह में भेजा कि उन्हें लाएँ।

प्रेरित वही कर रहे थे जिसकी आज्ञा यीशु ने उन्हें दी थी—सुसमाचार का प्रचार करना। वे परमेश्वर की इच्छा के ठीक केन्द्र में थे। और ठीक उसी स्थान पर उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा।

बाधा: जेल!

पद 18 में देखें कि क्या हुआ। महायाजक और सद्की क्रोधित थे। बाइबल कहती है कि उन्होंने सचमुच प्रेरितों को पकड़कर जेल में डाल दिया। यीशु का अनुसरण करने के ठीक बीच में उन्हें विरोध का सामना करना पड़ा और इससे भी बढ़कर, उन्हें जेल में डाल दिया गया।

जब हम विरोध, पहाड़ों और चुनौतियों का सामना करते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए?

#1 परमेश्वर की योजना पर भरोसा रखें

पद 19 में प्रभु का स्वर्गदूत आता है और उनके लिए बन्दीगृह के द्वार खोल देता है। जहाँ कोई मार्ग दिखाई नहीं देता, वहाँ परमेश्वर मार्ग बनाएगा। वह हमारी हर सीमा की जंजीर को तोड़ देगा।

एक अतिरिक्त बात: प्रेरितों के काम 4:29-31 में उन्होंने पहले भी प्रार्थना की थी कि परमेश्वर विरोध और सताव के बीच उन्हें साहस दे। उन्हें परमेश्वर से की गई अपनी प्रार्थना याद रही होगी। उन्होंने भरोसा रखा कि परमेश्वर उनकी सहायता करेगा।



अपनी बुलाहट में कदम रखें। अपनी सीमाओं को तोड़ें!
उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन हेतु मार्गदर्शिका

इसी प्रकार, अपनी चुनौतियों के बीच हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। हम प्रार्थना करके और उसे खोजकर ऐसा कर सकते हैं।

#2 परमेश्वर बोलेगा

पद 19 के अन्त और पद 20 में प्रभु का स्वर्गदूत उनसे बात करता है। हमारी चुनौतियों के बीच परमेश्वर हमसे बात करेगा।

इसीलिए हमें परमेश्वर के वचन और उसकी प्रतिज्ञाओं को थामे रहना चाहिए। हमें अपनी सीमाओं को अपने मार्ग का निर्धारण नहीं करने देना चाहिए। हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को दृढ़ता से थामना चाहिए।

#3 आज्ञाकारिता में आगे बढ़ें

पद 21 में, जब उन्होंने स्वर्गदूत की बात सुनी, तो वे भोर होते ही आगे बढ़ गए। यह आज्ञाकारिता है—सीमाओं के बावजूद परमेश्वर का अनुसरण करना।

परमेश्वर के उद्देश्य का अनुभव करने के लिए हमें विश्वास का कदम उठाना होगा और साहस के साथ आगे बढ़ना होगा।

हमें अपनी सीमाओं को तोड़ना होगा, ताकि हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में कदम बढ़ा सकें।

यह जानें कि परमेश्वर ने हमें बुलाया है और हमें योग्य बनाया है। परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें उस पर भरोसा रखना और उसकी आज्ञा मानना होगा।